www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

अंग दर्द सिंड्रोम

के संस्करण 2016

३.काम्प्लेक्स रीजनल पेन सिंड्रोम टाइप १:
(पर्यायवाची: रिफ्लेक्स सिम्पैथेटिक डिस्ट्रॉफी,लोकलाईज़्ड इडिओपथिक मस्कुलोस्केलेटल पेन सिंड्रोम)

३.१.यह क्या होता है?

यह अंगों में होने वाला तीव्र दर्द होता है जिसका कोई कारण ज्ञात नहीं होता व् जिसके साथ त्वचा में परिवर्तन भी देखे जाते हैं।

३.२. यह कितनी आम बीमारी है?

यह कितनी आम बीमारी है इस बारे में ठीक से जानकारी नहीं है।यह बीमारी किशोरों में(औसतन १२ वर्ष की आयु में) खास कर लड़कियों में पायी जाती है।

३.३.इस बीमारी के प्रमुख लक्षण क्या होते हैं?

आमतौर से अंगों में लम्बे समय से अत्यधिक दर्द होता है जिसकी तीव्रता बढ़ती रहती है और विभिन्न दवाओं का असर नहीं होता।अधिकतर समय के साथ प्रभावित अंग को इस्तेमाल करने में भी तकलीफ महसूस होने लगती है।
हलके स्पर्श जैसी अनुभूतियाँ जो आमतौर से दुखदाई नहीं होती वह भी इन बच्चों को अधिक दुखदाई महसूस होती हैं,इसे "ऐलोडाईनिआ"कहते हैं।
यह लक्षण बच्चों की दिनचर्या को भी प्रभावित करते हैं जिसकी वजह से उनकी शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है।
समय के साथ कुछ बच्चों के अंगों में सूजन होना या पसीना आना ,रंग में परिवर्तन(सफ़ेद पड़ जाना या बैंगनी धब्बे पड़ जाना) इत्यादि हो सकता है।बच्चे प्रभावित अंग को इस्तेमाल नहीं करते व् उसको विभिन्न मुद्रा में रखते हैं।

३.४. इस रोग का निदान कैसे किया जाता है?

कुछ वर्ष पहले तक इस बीमारी को विभिन्न नामों से जाना जाता था परन्तु अब इस बीमारी को सभी चिकित्सक काम्प्लेक्स रीजनल पेन सिंड्रोम कहते हैं।इसके निदान के लिए कई प्रकार के मानदंडों का प्रयोग किया जाता है।
इस बीमारी का निदान बहुत हद्द तक इसके लक्षणों को पहचान कर किया जाता है जैसे शारीरिक जांच और विशिष प्रकार का दर्द (जो तीव्र व् लम्बे समय तक रहने वाला होता है,जिसमें अंग का इस्तेमाल करने में तकलीफ रहती है,दवाओं का असर नहीं होता व् ऐलोडाईनिआ होता है)
रोगी के द्वारा बताये गए व् चिकित्सक द्वारा देखे गए लक्षणों के संयोजन से इस बीमारी के निदान के निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है।इस के निदान के लिए यह भी आवश्यक है की मरीज को ऐसी कोई भी बीमारी न हो जिसका इलाज बच्चों के चिकित्सक के द्वारा किया जाता हो।इसके बाद ही बच्चे को बच्चों के गठिया रोग विशिषज्ञ को मिलना चाहिए।लेबोरेट्री की जाँच साधारणतय ठीक होती हैं व् एम आर आई में हड्डी,जोड़ अथवा मांसपेशी में कोई विशिष तकलीफ दिखाई नहीं देती।

३.५.इस बीमारी का इलाज कैसे करते हैं?

फ़िज़ियोथेरेपिस्ट व् ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट के निर्देशन में एक बेहतरीन व्यायाम के क्रम को करना इस बीमारी का मुख़्य इलाज है।साइको थेरेपी का इस्तेमाल ज़रुरत पड़ने पर किया जा सकता है।इन सब के साथ या अलग से कुछ और चिकित्सा पद्दत भी इस्तेमाल की गयी हैं,जैसे अवसाद दूर करने की दवा,बायो फीड बैक,त्वचा के नीचे इलेक्ट्रिक नर्व स्टिमुलेशन व् व्यवहार संशोधन। इन सभी का नतीजा लगभग एक सा ही है।दर्द कम करने की दवा से आमतौर से कोई असर नहीं होता है। फिलहाल इस बीमारी के होने के कारन का पता लगाने व् उसी मुताबिक उसका इलाज करने पर फिलहाल अनुसन्धान चल रहा है। इस बीमारी का इलाज सबके लिए कष्टप्रद होता है: बच्चे,परिवारजन व् इलाज करने वाली टीम।इस बीमारी के कारण होने वाली मानसिक चिंता के लिए मनोवैज्ञानिक सलाह की आवश्यकता पड़ती है।इस बीमारी में इलाज तब नाकाम होता है जब परिवारजन इसके निदान को मान नहीं पाते व् इसके लिए सुझाये गए इलाज की सभी पध्दतियों का पालन नहीं करते।

३.६. इस बीमारी का प्रोग्नोसिस क्या होता है?

व्यस्कों की तुलना में बच्चों में इस बीमारी का प्रोग्नोसिस बेहतर होता है।इसके साथ ही इस बीमारी से पीड़ित बच्चे व्यस्कों की तुलना में जल्दी ठीक हो जाते हैं।हालाँकि पूर्ण रूप से ठीक होने में समय लगता है व् यह अवधि प्रत्येक बच्चे में अलग होती है।समय पर निदान व् इलाज से प्रोग्नोसिस बेहतर होता है।

३.७. रोजमर्रा की दिनचर्या पर क्या प्रभाव होता है?

बच्चों को स्कूल जाने,नियमित कसरत व् व्यायाम करने व् संगी साथियों के साथ समय व्यतीत करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।